बुखार में आने वाले दौरे

दौरा क्या होता है?

सामान्य भाषा में इसे फिट, तान, दौरा, झटका, खेंच या चमकी कहते हैं। इसके कई प्रकार हो सकते हैं जैसे:

- पूरे शरीर या शरीर के किसी हिस्से में रह–रह कर खिंचाव होना।
- आंखे या चेहरे का एक तरफ हो जाना।
- कुछ समय के लिए बेहोशी आ जाना।
- असामान्य संवेदना या अनुभूति, जैसे डर लगना, कुछ दिखाई या सुनाई देना।
- एकटक देखना या अपने में गुम हो जाना।

दौरा क्यों होता है?

हमारा मस्तिष्क छोटी–छोटी कोशिकाओं से बना होता है जिन्हें तंत्रिकाऐं कहते है, इन्हीं तंत्रिकाओं के अत्यधिक उत्तेजित होने से दौरे आते हैं। इनका बुरी आत्माओं या भूत–प्रेत से कोई संबंध नहीं है। ऐसा समझना एक अंधविश्वास है, इसमें कोई वैज्ञानिक तर्क नहीं है।

बुखार में आने वाले दौरे क्या होते हैं?

एक माह से छः साल के बच्चों में बुखार के दौरान फिट आ सकते हैं। बुखार की कोई भी वजह हो सकती है। फिट के दौरान आपका बच्चा अकड़ जाता है या ढीला पड़ सकता है। कई बार वह बेहोश हो जाते हैं आस–पास की घटनाओं का ध्यान नहीं रहता है और हाथ पैरों में झटके महसूस होते हैं।

बुखार में आने वाले दौरे क्यों आते हैं?

बच्चों में बुखार आने पर मस्तिष्क के क्रियाकलाप में बाधा पड़ने से दौरे आ जाते हैं। इसकी शायद एक वजह यह है कि बच्चों का दिमाग अविकसित होने के कारण उस पर बुखार का असामान्य प्रभाव पड़ता है। कई बार यह समस्या अनुवांशिक होती है एवं कई पीढियों एवं परिवार के अन्य सदस्यों में भी यह बीमारी होती है।

बच्चे को फिट आने पर मुझे क्या करना चाहिए?

बच्चे को दौरा पड़ने पर क्या करें?

क्या करें	क्या नहीं करें
1. शांत रहें 2. बच्चे के साथ रहें 3. हो सके तो दौरे के शुरू होने और खत्म होने का समय नोट करें 4. बच्चे के कपड़े ढीले कर दें। 5. बच्चे को एक तरफ करवट करके लिटाएं। 6. बच्चे को खतरनाक चीजों से दूर रखें, जैसे आग,फर्नीचर के तेज कोने इत्यादि। 7. बच्चे के सिर के नीचे मुलायम चीज रखें जिससे सिर फर्श से ना टकराए। 8. मुँह और नाक से आने वाला पानी और झाग साफ करें।	1. घबराएं नहीं। 2. बच्चे को पकड़ने या दौरे को रोकने की कोशिश ना करें। 3. बच्चे के मुंह में कुछ ना डाले। 4. बच्चे को ठंडे या गरम पानी में ना रखें।

चित्र 1 : रिकवरी पोजीशन

क्या दौरा रोकने के लिए घर पर कुछ किया जा सकता है?

ध्यान रहे कि ज्यादातर दौरे कुछ सैकेंड में या कुछ मिनट में इलाज के बिना ही रूक जाते हैं। अगर दौरा 4–5 मिनट से ज्यादा समय तक रहे तब इलाज की जरूरत पड़ती है और इसके लिए मिडाजोलम एवं डाइजॉपाम का प्रयोग किया जाता है। इसे अलग–अलग तरीकों से दिया जा सकता है।

मिडाजोलम

नाक से मिडाजोलम देने का तरीका

चित्र–2a

1. बच्चे को चित्र 1 में बताये अनुसार किसी एक करवट (रिकवरी स्थिति) में लिटायें।
2. मिडाजोलम स्प्रे बोतल (चित्र 2a) के नोजल को हल्के से किसी एक नासिकाछिद्र के अंदर डालें।
3. बोतल की नोजल को नीचे की तरफ दबायें इससे दवाई नासिका छिद्र के अंदर जाती है। अपने चिकित्सक की सलाह के अनुसार, निर्दिष्ट संख्या में स्प्रे करें।
4. अगर मिडाजोलम नेसल स्प्रे उपलब्ध ना हो तो, इन्जेक्शन मिडाजोलम (चित्र 2b) (1 मि.ग्रा./मि.ली. या 5 मि.ग्रा./मि.ली.) डॉक्टर द्वारा बताये गये उचित मात्रा में बिना सुई की सिरिंज से नाक में डाला जा सकता है।

चित्र–2b

बक्कल मिडाजोलम देने का तरीका

1. डाक्टर द्वारा बताई दवा की मात्रा 2 एम.एल. की सिरिंज में निकाल लें।
2. फिर सिरिंज में से सुई को निकाल लें और बच्चे को रिकवरी पोजीशन में रखें। (चित्र–1)
3. सावधानी से बिना सुई के सिरिंज को दांत और गाल के बीच के स्थान में रखे तथा पिस्टन को दबा कर दवा निकालें। (चित्र–3)
4. बच्चे के दोनों होठ बंद करवा दे और जिस तरफ दवा डाली है उसे नीचे रखें जिससे दवा बाहर न निकले। दवा को असर करने में 3–5 मिनट का समय लगता है क्योंकि दवा घुलकर खून में जाती है।

चित्र–3

रेक्टल डाइजॉपाम सपोज़िटरी देने का तरीका

1. दवा को डॉक्टर की बतायी मात्रा में प्रयोग करें।
2. दवा को सावधानी से पैकेट से निकालें। (चित्र–4)
3. बच्चे को एक तरफ रिकवरी पोजीशन में रखे घुटनों को छाती पर मोड़ दें। दवा को गुदा में डाल दें। (चित्र–5)
4. दोनों कूल्हों को 2 मिनट तक जोड़ कर रखें।
5. इस तरह से दवा को असर करने में 5–8 मिनट का समय लगता है क्योंकि दवा घुलकर खून में जाती है।

चित्र 4

चित्र 5

क्या मेरे बच्चे को बुखार आने पर फिट दोबारा आ सकते हैं?

हाँ, यह संभव है। पहले फिट के बाद, एक साल में दूसरा फिट आने की संभावना लगभग 30 प्रतिशत होती है, इसका मतलब 70 प्रतिशत (10 में से 7) बच्चों में दूसरा फिट नहीं आएगा। अगला फिट आने की संभावना हर साल कम होती जाती है, और बच्चे की उम्र 6 वर्ष होने के बाद फिट आने की संभावना न के बराबर हो जाती है।

बच्चे को भविष्य में बुखार आने पर मुझे क्या करना चाहिए?

बुखार कम करने के लिए डॉक्टर द्वारा बताई हुई दवा जैसे पेरासेटामॉल का इस्तेमाल करें। याद रखें ये दवाएं फिट को नहीं रोकती। इन दवाओं से बच्चे को बुखार से होने वाली तकलीफ कम होती है। बुखार कम करने वाली दवाएं संक्रमण (इन्फेक्शन) को भी नहीं रोकती।

क्या इस बीमारी में जांचे आवश्यक है?

बुखार में आने वाले फिट में सामान्यतः जांचे नहीं की जाती है। यदि आपका बच्चा 18 माह से कम उम्र का है, एवं दिमागी संक्रमण (मेनिंजाइटिस) की शंका है, तब डॉक्टर लंबर पंक्चर (पीठ के पानी की जांच) की सलाह देते है। इसमें एक छोटी सुई पीठ के निचले हिस्से में रीढ़ की हड्डी में डाल कर दिमाग से आने वाले पानी को जांच के लिए निकाला जाता है। छोटे बच्चों की शारीरिक जांच में दिमागी संक्रमण का पूरे तौर पर पता चलना मुश्किल होता है, यह पानी दिमागी संक्रमण की जांच के लिए जरूरी होता है। कभी–कभी सी.टी स्कैन या ई.ई.जी. करने की सलाह दी जाती है। आवश्यकता अनुसार बुखार की वजह जानने के लिए रक्त या पेशाब की जांच भी की जाती है।

क्या कुछ और दवाइयाँ है, जो बुखार में आने वाले दौरों की रोकथाम कर सकती हैं?

हाँ, लेकिन ये दवाइयां रोजाना लेने की जरूरत होती है और इनके कई अवांछित असर शरीर पर दिख सकते हैं। बुखार में आने वाले फिट ज्यादातर बच्चों में कोई नुकसान नहीं करते हैं, इसलिए इनमें लगातार चलने वाली दवाएं अनावश्यक होती है। कई बार थोड़े समय के लिए फिट रोकने की दवाएं दी जाती है, जैसे हर बार बुखार आने पर 2–3 दिन के लिए फिट रोकने की दवा का इस्तेमाल करना। यह पांच साल की उम्र तक किया जाता है। क्योंकि यह तरीका कुछ परिस्थितियों में ही कारगर है, आपके डाक्टर जरूरत होने पर ही इसकी सलाह देते हैं।

क्या मेरे बच्चे को भविष्य में मिरगी हो सकती है?

ज्यादातर बुखार में आने वाले फिट 5 वर्ष की उम्र होने पर खत्म हो जाते हैं। सौ में से 1–2 बच्चों को बाद में मिरगी की शिकायत हो सकती है। खासकर वह बच्चे जिन्हें पहले से ही दिमागी बीमारी है या जिनके परिवार में मिरगी अनुवांशिक है या जिनके बुखार के समय आने वाले दौरे लंबे समय चलें (बार–बार हों या शरीर के एक हिस्से में हों), इनमें मिरगी होने की संभावना अन्य से ज्यादा होती है।

बुखार में आने वाले दौरे!
आपके काम की जरूरी बातें

माता–पिता/मरीज के लिए मार्गदर्शक पुस्तक

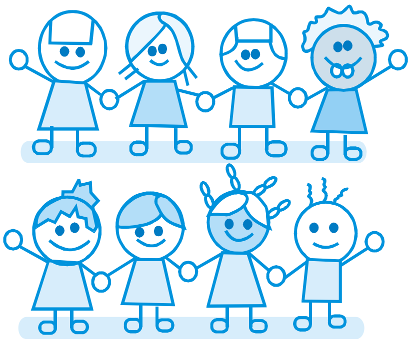

बाल तंत्रिका तंत्र विज्ञान, बाल रोग विभाग

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान

नई दिल्ली, भारत

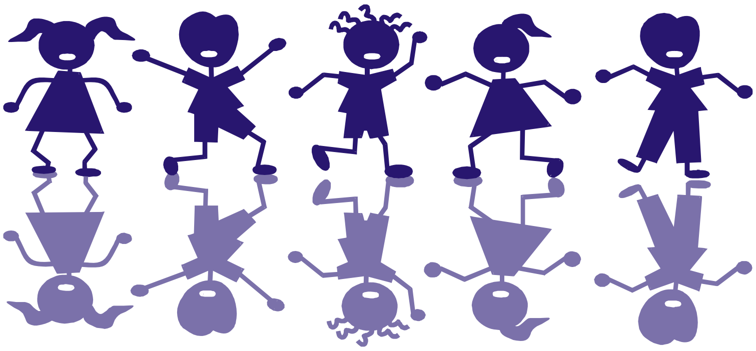

पूछताछ के लिए नीचे लिखे हुए ई मेल पर संपर्क करें:

pedneuroaiims@yahoo.com
drsgulati@yahoo.com

बाल तंत्रिका विभाग की सेवाएं, बाल रोग विभाग, अ.भा.आ.सं., नई दिल्ली

बाल तंत्रिका विभाग की ओ.पी.डी.: मंगलवार व शुक्रवार 9 बजे सुबह: कमरा नं. 5,3,14

शिशु विकास क्लिनिक: सोमवार 2 बजे: कमरा नं. 5

न्यूरोसिस्टीसर्कोसिस क्लिनिक: सोमवार 2 बजे: कमरा नं. 11

बाल तंत्रिका विज्ञान क्लिनिक: बुधवार 2 बजे: कमरा नं. 5, 4, 3

आटिज्म क्लिनिक: वीरवार 9 बजे: कमरा नं. 13

तंत्रिका-मांसपेशी क्लिनिक: शुक्रवार 2 बजे: कमरा नं. 3, 4